नव भारत, भोपाल

19 MAY 2017

असाधारण रणनीतिकार थे अनिल माधव दवे

भरोसा नहीं होता है कि अनिल दवे जी अब हमारे बीच नहीं हैं. वे अदभुत व्यक्तित्व के धनी, नदी संरक्षक, पर्यावरणविद, मौलिक चिंतक, कुशल संगठक थे. अनिल जी मौलिक लेखक थे. वे कल्पनाशील मस्तिष्क के धनी थे. उन्होंने अनेकों किताबें लिखीं. वे असाधारण रणनीतिकार थे. बचपन से जीवन भारत माता के चरणों में समर्पित कर दिया. उन्होंने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक के नाते पूरा जीवन, देश और समाज की सेवा में समर्पित कर दिया. अनिल जी को जो भी दायित्व मिला, उनको पूरा किया. संघ की योजना के अनुरूप वे भोपाल विभाग के प्रचारक थे और मैं उनका स्वयं-सेवक रहा. वे सबका ध्यान रखते थे. मुझे याद है कि जब मेरा जब एक्सीडेंट हुआ था तब उन्होंने मेरा आपरेशन मुम्बई में डॉ. ढोलकिया के हाथों से ही करवाना सुनिश्चित किया था. वे अपने कार्यकर्ताओं का हमेशा ध्यान रखते थे. सदैव कार्य में रमे रहते थे. कुशल रणनीतिकार थे. वर्ष 2003, 2008 व 2013 के विधान सभा व लोक सभा के चुनाव उनकी कुशल रणनीति के कारण हम जीते, मैं यह कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. विजय में उनका उल्लेखनीय योगदान था. सदैव काम मे लगे रहने वाले, रमे रहने वाले एवं माँ नर्मदा के वे ऐसे भक्त थे कि उन्हें जब भी समय मिलता था, मैय्या के तट पर पहुँच जाते थे. वे पायलट थे. उन्होंने नर्मदा की परिक्रमा छोटे विमान से की थी, फिर राफ्ट से गुजरे थे.

(शेष पेज 9 पर)

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के ब्लॉग से

(पेज एक का शेष)

असाधारण रणनीतिकार थे अनिल ...

इस दौरान नर्मदा संरक्षण के लिए गाँवों में संरक्षण चौपाल बैठकें की थीं. बांदराभान में नर्मदा महोत्सव का प्रति दो वर्ष में आयोजन करते थे. मैं भी उसमें भाग लेता था. नमामि देवि नर्मदे सेवा यात्रा का विचार जब मैंने उन्हें बताया था तो वे बहुत प्रसन्न हुए थे. मेरी बहुत इच्छा थी कि वे नर्मदा सेवा यात्रा में आयें और वे 09 मई को यात्रा में आए. नदी जल और पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम में 8 मई को भोपाल में भाग लिया था. परसों उनसे मेरी बात हुई थी. मैंने बताया कि अमरकंटक कार्यक्रम बहुत अच्छा हुआ. बहुत एवं अल्प समय में पर्यावरण एव वन मंत्री होने के नाते अस्वस्थ होने के बाद भी उन्होंने बड़ी दक्षता एवं प्रशासनिक कुशलता का परिचय दिया था. भारतीय संस्कारों में पले-बढ़े पगे अनिल जी अब हमारे बीच नहीं हैं, सहज भरोसा नहीं होता.